शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक ३२ : नई दिल्ली : ११-१७ नवम्बर २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण ५७ तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा आदि श्रमणी १०२, सर्व १५९ जसोल में सानंद चातुर्मासिक प्रवास कर रहे हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। ५ नवम्बर को दीक्षा का कार्यक्रम हर्ष और उल्लासपूर्ण वातावरण में सानंद संपन्न हो गया। इस अवसर पर बाड़मेर जिले के प्रायः सभी क्षेत्रों तथा अन्य अनेक प्रान्तों से लोग बड़ी संख्या में आए। कई वर्षों के बाद ऐसा विराट दीक्षा समारोह आयोजित हुआ, ऐसा लोगों का कहना है।

समझो पापों को-१५

आचार्य महाश्रमण

आर्हत वाङ्मय में कहा गया है--**'समो निंदापसंसासु'**--निंदा और प्रशंसा में सम रहना। साधक को समता की साधना करनी चाहिए। कोई निंदा करे तो भी सम रहे और प्रशंसा करे तो भी सम रहे। द्वेषयुक्त परनिंदा से बचना चाहिए। बातें करनी हैं तो कोई अच्छी और सार्थक बात करें, ज्ञान की बात करें, तात्विक चर्चा करें। इधर-उधर की फालतू बातें करने से समय का अपव्यय तो होता ही है, कर्मों का बंध भी होता है।

अठारह पापों में पन्द्रहवां पाप है--परपरिवाद, अर्थात दूसरों की निन्दा करना। जो दोष दूसरों में है ही नहीं, उसका मिथ्या आरोपण करना। आचार्य भिक्षु ने लिखा है--

जो साची ने साची कहें, तेतो निंदा म जाणों कोय।
साची ने साची कहणी निसंक सूं, ते पिणअवसर जोय।।

सच्ची बात को सच्ची कहना निन्दा नहीं है। किन्तु सच्ची बात को भी अवसर देखकर ही कहना चाहिए। बिना अवसर सच्ची बात भी नहीं कहनी चाहिए, बल्कि उस समय मौन रह जाना चाहिए। साधु का तो धर्म ही है कि वह सहन करे। कोई निन्दा करे और गाली दे तो भी सहन करे और आत्मस्थ बना रहे। गाली देने वाला तो निम्न आदमी होता है। उस बेचारे के पास बढ़िया और मधुर शब्द हैं ही नहीं तो वह लाएगा कहां से? परम श्रद्धेय गुरुदेव तुलसी ने अपने गीत में कहा--

गाळीवान कठै स्यूं ल्यासी मांग मधुर वच प्यारो।'

गाली देने वाला मीठा वचन कहां से मांग कर लाएगा? आत्मा निष्कलुष और शुद्ध भावों से भावित है तो वाणी में मधुरता अपने आप आएगी। आत्मा कलुषित है तो उसका प्रभाव वाणी पर भी होगा। किसी के कटु वचन पर प्रतिक्रिया नहीं करनी चाहिए। एक छोटी-सी कहानी है--

एक युवक सेना में भर्ती हुआ। स्थितियां कुछ ऐसी बनीं कि पड़ोसी देश के साथ युद्ध छिड़ गया। उस युवक को अग्रिम मोर्चे पर जाना पड़ा। उसकी मां को चिन्ता हुई। एक ही बेटा, कहीं युद्ध में काम आ गया तो आखिरी सहारा भी छिन जाएगा। कठिन समय में आदमी मनौती मानता है। उस महिला ने भी मन में संकल्प किया--'बेटा सही सलामत घर आ गया तो मैं किसी साधु को घर बुलाकर भोजन कराऊंगी।'

संकल्प का प्रभाव या कोई सहज योग, शीघ्र ही उसका बेटा सुरक्षित घर आ गया। उसकी मां को अपार प्रसन्नता हुई। बेटे की सुरक्षित वापसी को उसने अपने संकल्प का प्रतिफल माना। उसने अपने सैनिक बेटे से कहा--'तुम्हें भोजन कराने से पहले अपने संकल्प की संपूर्ति करने के लिए पहले मैं किसी बाबा को बुलाकर भोजन कराऊंगी। बेटा बुद्धिमान था। उसने कहा--'ठीक है मां, तुम किसी भी साधु बाबा को भोजन कराओ, लेकिन वह मृत बाबा होना चाहिए।' बुढ़िया मां बेटे के कहने का आशय समझ नहीं सकी। वह प्रश्नायित आंखों से बेटे का मुंह देखने लगी। बेटे ने कहा--'मां तुम किसी बाबा को बुलाकर लाओ, जीवित या मृत की पहचान मैं स्वयं कर लूंगा।'

बुढ़िया गांव के बाहर आश्रम में रहने वाले बाबा के पास गई और निवेदन किया--'महाराज! मेरा एक संकल्प फला है। आप कृपा कर मेरे घर भोजन के लिए स्वयं पधारो या अपने किसी शिष्य को भेजो।' बाबा ने कहा--'मैं तो अब कहीं आता-जाता नहीं, अपने एक शिष्य को भेज देता हूं'--यह कह कर बाबा ने अपने एक शिष्य को बुढ़िया के घर भोजन के लिए भेजा। शिष्य बुढ़िया के साथ उसके घर गया। घर पहुंचते ही दरवाजे पर बैठा उसका बेटा बोला--'मां, यह भी कोई साधु है? कहां से पकड़ लाई ऐसे भुक्खड़ भिखारी को, जिसमें न ज्ञान, न प्रतिभा, न वैराग्य।' इतना सुनना था कि बाबा के उस शिष्य की आंखें अंगार जैसी हो गईं। कुपित होकर बोला--'अपना मुंह बंद कर। मैं स्वयं यहां नहीं आया, तेरी मां मुझे बुलाकर लाई है। पहले उसे पूछ। तूने मुझे भिखारी कैसे कहा? अब एक भी शब्द मुंह से निकाला तो मेरे कोप का भाजन बनेगा।' इतना कहकर साधु तेज कदमों से वापस लौट पड़ा। युवक के होंठों पर हल्की मुस्कान दौड़ गई।

एक-एक कर उस युवा सैनिक की मां आश्रम के तीन संन्यासियों को अपने घर भोजन कराने के लिए ले गई। लेकिन उसके बेटे के परीक्षण पर तीनों साधु अनुत्तीर्ण हो गए। बहुत आग्रह और निवेदन के बाद चौथा साधु उसके घर आया। बेटे ने उसे भी अनेक कटु शब्द कहे। वह साधु मुस्कराया और बोला--'वत्स! जैसा तुम कह रहे हो, मैं वैसा नहीं हूं। भोजन कराना, न कराना तुम्हारी इच्छा पर है। अगर तुम नहीं चाहते तो मुझे वापस लौट जाने में कोई शर्म या संकोच नहीं है। मैं इसे मान-अपमान की भावना से भी नहीं लेता। साधु बनते समय ही मैंने सोच लिया था कि मुझे ऐसी स्थितियों से भी गुजरना होगा।' इतना कह कर उस साधु ने एक स्नेहपूर्ण दृष्टि युवक पर डाली और वापस मुड़ गया। तभी वह युवक तेजी से उस साधु के सामने आया और उसके चरणों पर लुंठित हो गया। बोला--'क्षमा करें महाराज! मुझे जिस सच्चे साधु बाबा की तलाश थी, आपके रूप में वह मिल गए। अब आप पधारें और भोजन करें।' युवक श्रद्धा और सम्मान के साथ संन्यासी को लेकर मां के पास गया और उसे संबोधित कर कहा--'जिसका क्रोध, अहंकार, आकांक्षा, लोभ, मोह आदि उपशान्त हो जाएं, वह मृत साधु होता है। यह मृत बाबा है। मुझे ऐसे ही मृत बाबा की तलाश थी, जो पूरी हो गई।'

सामने वाला गुस्सा कर रहा है। उसके सामने कोई प्रतिकार न करो, शान्त भाव से खड़े रहो तो उसका गुस्सा जल्दी शान्त हो सकता है। संस्कृत साहित्य में कहा गया है--**अतृणे पतितो वह्निः स्वयमेवोपशाम्यति।**

जहां तृण या घास-फूस नहीं है, वहां कोई आग डाले तो वह निष्प्रभावी रहेगी। वहां तृण आदि होगा तभी आग प्रज्ज्वलित हो सकेगी। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी के जीवन में भी विरोध के अनेक अवसर आए। जो व्यक्ति विरोध को विनोद मानकर चलता है, उसे आवेश, आक्रोश और गुस्सा नहीं आता अथवा बहुत कम आता है। आदमी के जीवन में निंदा-आलोचना और विरोध की स्थिति आए तो उसे सहन करना चाहिए। ऐसा करने से पाप कर्म से बचाव भी हो जाता है।

दूसरों का दोष देखने से पहले स्वयं भी आत्मावलोकन करना चाहिए। स्वयं के दोषों और कमजोरियों पर भी दृष्टिपात करना चाहिए। हम अपनी तर्जनी अंगुली किसी की ओर उठाते हैं तो उसके साथ की तीन अंगुलियां हमारी ओर हो जाती हैं कि पहले अपने को देखो। किसी को बदनाम करने का प्रयास

नहीं करना चाहिए। उस समय मन में यह विचार आना चाहिए कि परनिंदा से मुझे मिलेगा क्या? कोई तथ्य बताना हो तो एक अलग बात है। किन्तु बदनाम करने की भावना से, स्वयं को तुष्ट करने के लिए किसी के बारे में परिवाद करना तुच्छता है। हमें इस परपरिवाद से बचने का प्रयास करना चाहिए। हमारे मुंह से कोई भी व्यर्थ शब्द नहीं निकलना चाहिए। शब्दों का भी अपना प्रभाव होता है। शब्दों को सुनकर एक आदमी क्रोधावेशित हो जाता है और दूसरा शान्त हो जाता है।

एक संन्यासी के पास एक लड़का गया। संन्यासी ने उस लड़के को भगवान का नाम लेने और माला फेरने की सत्प्रेरणा दी। लड़का पढ़ा-लिखा आधुनिक सोच का था। उसने लापरवाही से कहा--'बाबा! मंत्र शब्दों का समूह ही तो है और भगवान का नाम भी तो शब्द ही है। क्या रखा है कोरे शब्दोच्चार में?'

बाबा को उसे शिक्षा देनी थी। उन्होंने तुरन्त अपनी भावभंगिमा बदल ली और उसे कड़े शब्द कहे। बाबा की बात सुनकर लड़का तैश में आ गया। वह बाबा को बहुत बुरा-भला कहने लगा।

संन्यासी ने मृदु मुस्कान के साथ नम्र स्वर में कहा--'देखा शब्दों का चमत्कार? मैंने कुछ शब्दों का प्रयोग किया और तुम आगबबूला हो गए। शब्दों में आग लगाने की क्षमता है और आग बुझाने की भी क्षमता है।' शब्द से ज्यादा शब्द का अर्थ प्रभावी होता है। आप किसी शब्द का अर्थ नहीं जानते तो भले ही वह गाली हो, आप पर उसका कोई असर नहीं होगा। जो संस्कृत और अंग्रेजी नहीं जानता, उसे संस्कृत और अंग्रेजी में गालियां दो तो उस पर कितना असर होगा? माला आदि में पवित्र शब्द और पवित्र भावना निहित होती है, जो आत्मशुद्धि का हेतु बन जाती है। इसी तरह निन्दा में जो कठोर और रुक्ष अर्थ वाले शब्द होते हैं, वे सामान्य आदमी के मन को मलिन बनाने वाले होते हैं। हम सोचें कि किसी की निन्दा करने से हमें क्या लाभ होगा? निंदा करनी हो तो स्वयं द्वारा की गई गलतियों और भूलों के लिए अपनी निन्दा करें। दोषयुक्त परनिंदा तो कर्मों की दृष्टि से हमें भारी ही बनाएगी।

हम लोग प्रतिक्रमण करते हैं। उसमें आता है--**निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि**--निन्दा करता हूं, गुरु-साक्षी से गर्हा करता हूं और आत्मा का व्युत्सर्ग करता हूं।

दूसरों की निन्दा करने वाला व्यक्ति सोचे कि मैं कभी स्वयं की भी निन्दा करता हूं क्या? मुझमें भी तो अनेक कमजोरियां हैं। गलतियां और भूलें मुझसे भी तो होती हैं। अगर वे मुझे दिखाई नहीं देतीं तो दूसरों का छिद्रान्वेषण मैं क्यों करूं? अपनी भूलों और कमियों का तो पता भी चल जाता है, वे दिखाई भी दे जाती हैं, फिर दूसरों में कमियां हैं या नहीं, यह पता न हो तो उन्हें दूसरों के सामने प्रकट करने का मुझे क्या अधिकार है? व्यक्ति को यह सोचना चाहिए कि भाग्य से मुझे मनुष्य जीवन और भाषा में व्यक्त कर सकने में समर्थ वाणी मिली है तो इसका दुरुपयोग क्यों करूं? वाणी का उपयोग पाप कर्मों का बंध कराने वाले कार्यों में क्यों करूं? परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने एक शिक्षापरक दोहा फरमाया था--

वचन रतन मुख कोट है, होठ कपाट बणाय।
समझ-समझ हरफ काढ़िए, मत परवश पड़ जाय।।

वचन रत्न है, मुंह दुर्ग या कोट है, होंठ उसके द्वार हैं। इन द्वारों को बंद रखो। जरूरत हो, तभी खोलो। शहरों में फ्लेट और बंगलों के दरवाजे प्रायः बंद रहते हैं। घंटी बजाओ तो खोल देते हैं, अन्यथा बंद रहते हैं, क्योंकि खुला रखने में खतरा है। कोई भी अवांछित व्यक्ति घुस सकता है। हमें अपने दरवाजारूपी होठों को भी बंद रखना चाहिए। क्या पता कोई ऐसा शब्द निकल जाए, जिसके लिए बाद में पछताना पड़े। जरूरत हो तभी बोलें और सोच-समझकर विवेकपूर्वक बोलें, इसी में वाणी की सार्थकता है और इसी में अपना कल्याण भी निहित है।"

●

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण जसोल में

विरक्त व्यक्ति का आभूषण है सुगुण

३१ अक्टूबर। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातःकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत अपने मंगल प्रवचन में कहा--'दुनिया में आमोद-प्रमोद, विनोद आदि चलता है। उत्सव मनाए जाते हैं, गीत गाए जाते हैं। जिस व्यक्ति के चित्त में परमार्थ भावना और आत्मसाधना करने की भावना जाग जाती है, उसे ये सारी चीजें विलाप के समान प्रतीत होती हैं। आमोद-प्रमोद, उत्सव, गीत आदि में उसका मन नहीं रमता। भौतिक दृष्टि वाले व्यक्ति के लिए नाटक, गीत आदि रुचिकर होते हैं, किन्तु परमार्थ की चेतना वाला व्यक्ति सोचता है कि ये नाटक आदि तो मात्र बिडम्बना है। सामान्य व्यक्ति जहां आभूषण, अलंकार, काम, भोग आदि में रुचि लेता है, वहीं विरक्त चित्त वाले व्यक्ति के लिए आभूषण आदि भारभूत होते हैं। उसके लिए सुगुण ही मानों आभूषण होते हैं। काम-भोग आदि तात्कालिक रूप में सरस लग सकते हैं, किन्तु उनका परिणाम नीरस होता है। इसलिए व्यक्ति को आत्मस्थ रहने का प्रयास करना चाहिए।' कार्यक्रम में मुनि जिनेशकुमारजी ने भावाभिव्यक्ति दी।

रामायण आख्यान परिसंपन्न

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने रात्रिकालीन व्याख्यान के दौरान गत १० सितम्बर को यति केशराजजी द्वारा रचित और आचार्य भिक्षु द्वारा संपादित 'जैन रामायण' का वाचन प्रारंभ किया था। रात्रिकालीन कार्यक्रम में लगभग पौन घंटे तक पूज्य आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से सरस और रोचक शैली में राग-रागिनियों के साथ किया जाने वाला मधुर वाचन जनता के लिए अत्यन्त आह्लाददायक और तृप्तिदायक रहा। इस हेतु जहां जसोल के निवासियों और कुटीरों में अवस्थित सेवार्थियों की पण्डाल में बड़ी संख्या में उत्साहपूर्ण उपस्थिति देखी गई, वहीं बालोतरा से आने वाले श्रोताओं की संख्या भी सैकड़ों में रही। पूज्यप्रवर द्वारा उनकी ओजपूर्ण वाणी में फरमाया जाने वाला यह आख्यान हजारों श्रोताओं को विविध ऐतिहासिक जानकारियां प्रदान करने के साथ-साथ पाथेय प्रदायक भी सिद्ध हुआ। आचार्यप्रवर ने आज रात्रि में इस शृंखला को परिसंपन्न किया।

तुच्छ हैं ऐन्द्रियिक सुख

१ नवम्बर। प्रातःकालीन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा 'गार्हस्थ्य में काम-भोग चलते हैं, किन्तु वे दुःखकारक होते हैं। साधु तो तपोधन होते हैं। तपस्या ही उनका धन होता है। उन्हें तप और साधना से सुख मिलता है। साधु समता की साधना करने वाला और उपशम का विकास करने वाला होता है। संयम और तप के सुख के सामने ऐन्द्रियिक सुख तुच्छ होते हैं। व्यक्ति यह सोचे कि मेरे जीवन में साधना का कितना विकास है। गार्हस्थ्य में भी साधना का अभ्यास और विकास किया जा सकता है। अध्यात्म साधना में इन्द्रिय विजय का अभ्यास अपेक्षित होता है। जिनका लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति है, उन्हें विशेष रूप से साधना का विकास करना चाहिए।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन के मध्य छठे अधिशास्ता परमपूज्य माणकगणी की वार्षिक पुण्यतिथि पर उनका श्रद्धासिक्त स्मरण करते हुए उनके जीवन के विभिन्न कोणों को प्रस्तुत किया।

युवक में रहे उत्साह और साहस

२ नवम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में आज से अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के ४६वें वार्षिक अधिवेशन का शुभारंभ हुआ। प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारी दुनिया में नियति एक शक्तिशाली तत्त्व है। नियति को सर्वथा अस्वीकार कर जगत की सम्यक व्याख्या नहीं की जा सकती। जैन दर्शन के अनुसार इसे पारिणामिकभाव का एक अंग कहा जा सकता है। दुनिया में कुछ ऐसे नियम होते हैं, जिनके आधार पर दुनिया चलती है। जो जन्मता है, उसकी मृत्यु निश्चित है। यह एक जागतिक नियम है। जन्म और मृत्यु के इस चक्र में प्राणी भ्रमण करते हैं। व्यक्ति यह सोचे कि उसे एक दिन इस दुनिया से अवश्य जाना होगा। कोई भी संसार में अमर नहीं है। इसलिए मैं अपने जीवन का सत्कार्यों में सदुपयोग करूं।'

अ. भा. तेयुप अधिवेशन के संभागियों को संबोधित करते हुए परमपूज्य आचार्यप्रवर ने कहा--'युवावस्था बहुत कार्यकारी होती है। जैसा उत्साह और साहस युवावस्था में होता है, वैसा अन्य अवस्था में प्रायः कम देखने को मिलता है। उत्साही और साहसी युवक अच्छा कार्य कर सकता है। युवकों की तीन श्रेणियां हो सकती हैं--निम्न, मध्यम और उत्तम। जिन युवकों में पवित्र कार्य करने हेतु उत्साह और साहस दोनों नहीं होते, वे निम्न श्रेणी के युवक होते हैं। मध्यम श्रेणी के युवक वे होते हैं, जिनमें उत्साह तो होता है, किन्तु साहस नहीं होता। बाधा उत्पन्न होने पर साहस के अभाव में वे कार्य को बीच में ही छोड़ देते हैं। उत्तम श्रेणी के युवक विघ्नों के बार-बार आने पर भी उत्साही बने रहते हैं और साहस के साथ कार्य को आगे बढ़ाते हैं। उत्तम श्रेणी का युवक बनकर पवित्र कार्यों में अपनी शक्ति का नियोजन करना चाहिए।'

पूज्य आचार्यप्रवदर ने प्रवचन के उपरान्त उदयपुर निवासी **स्वर्गीय नानालालजी खीमावत** की श्रद्धा-भक्ति का उल्लेख करते हुए उन्हें **'श्रद्धानिष्ठ श्रावक'** तथा हैदराबाद निवासिनी **श्रीमती इचुदेवी बैद** की श्रद्धा भावना का उल्लेख करते हुए उन्हें **'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति'** संबोधन से संबोधित किया।

अभातेयुप का ४६वां वार्षिक अधिवेशन

३ नवम्बर। अभातेयुप के वार्षिक अधिवेशन का दूसरा दिन। प्रातःकालीन कार्यक्रम के प्रारंभ में प्रस्तुत मंगल संगान के उपरान्त अभातेयुप के महामंत्री श्री प्रफुल्ल बेताला ने अपने भावोद्गार व्यक्त किए। अध्यक्ष श्री संजय खटेड़ ने अखिल भारतीय तेयुप द्वारा संपादित कार्यों की अवगति दी। अभातेयुप द्वारा अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित द्विमासिक पत्रिका 'युवा होरिजन' अध्यक्ष श्री संजय खटेड़ तथा कोर्डिनेटर श्री सुशील चोरड़िया ने पूज्यवर के करकमलों में उपहृत की। श्री सुशील चोरड़िया ने नव प्रारब्ध पत्रिका के विषय में अपने उद्गार व्यक्त किए। बेंगलुरु से समागत श्री मनीष पगारिया ने अपने गीतों की नवीन सीडी 'तेरापंथ का क्या कहना' लोकार्पित की।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा--'युवा देश, समाज और संघ की शक्ति है। युवा नाम है एक नई शक्ति, नई ऊर्जा व नए सपनों का। युवाशक्ति को ऊर्जा का प्रतीक माना जाता है। यदि युवकों की शक्ति का सदुपयोग हो तो समाज व देश के निर्माण में उनकी बड़ी भूमिका हो सकती है, समाज में नई क्रान्ति का सूत्रपात हो सकता है। वस्तुतः युवक वह होता है, जो तनावमुक्त, प्रतिस्रोतगामी और परिस्थितियों से जूझने वाला होता है। अभातेयुप के साथ हजारों युवक जुड़े हुए हैं। अपेक्षा है कि युवाशक्ति अपने कर्तृत्व कौशल से एक नए इतिहास का सृजन करे।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'परमपूज्य गुरुदेव तुलसी के शासन काल में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद का जन्म हुआ। यह संस्था एक कारखाना है, जहां व्यक्तित्वों

का निर्माण होता है। विभिन्न संघीय संस्थाओं में आज जो कार्यकर्ता हैं, उनमें से कितने कार्यकर्ता पहले तेयुप से जुड़े हुए थे। मानों यहां उनके व्यक्तित्व का निर्माण हुआ, उसके बाद वे अन्य संस्थाओं में कार्य करने लगे। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी और परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी का आध्यात्मिक साया इस संस्था को प्राप्त हुआ। अनेक संतों का संरक्षण और मार्गदर्शन भी इस संस्था को मिलता रहा है। युवकों में उत्साह है, कार्य करने की लगन है, विनय, समर्पण, कार्यनिष्ठा और विजन है। इन्हें अगर मंजिल बता दी जाए और मार्गदर्शन दे दिया जाए तो ये मंजिल तक पहुंचने के लिए बखूबी पराक्रम कर सकते हैं। तेरापंथ युवक परिषद के माध्यम से समाज के युवकों को विकास करने का अवसर मिल गया।'

आचार्यप्रवर ने आगे कहा--'युवक परिषद द्वारा आज कितने-कितने कार्य किए जा रहे हैं। युवकों और किशोरों के लिए संघीय संस्कार कार्यशाला का आयोजन, अभिनव सामायिक, मंत्र दीक्षा, बारहव्रत कार्यशाला, नशामुक्ति जैसे महत्त्वपूर्ण कार्यों का संचालन अपने आप में विशेष बात है। यह एक सक्षम संस्था है। इसका सम्यक् उपयोग होना चाहिए। तेयुप एक प्रकार की सेना है। यह एक गौरवपूर्ण संस्था है। युवकों में कार्य करने की शक्ति है, इसमें अच्छे कार्यकर्ता हैं। यह संस्था पवित्र कार्यों में अपनी शक्ति का नियोजन करती रहे।'

अभातेयुप के प्रकाशन 'तेरापंथ टाईम्स' और 'युवादृष्टि' के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'तेरापंथ टाईम्स तेरापंथ समाज के समाचारों का सुन्दर माध्यम है। पाठकों को अनेक जानकारियां तथा बहिर्विहारी साधु-साध्वियों के संवाद भी इस पत्र के माध्यम से प्राप्त हो सकते हैं। यह एक उपयोगी पत्र है। इसमें सौष्ठव भी आया है। युवादृष्टि भी एक उपयोगी पत्रिका है। किसी एक ही विषय की विस्तृत जानकारी इस पत्रिका के माध्यम से मिल सकती है। जहां तक मैंने आकलन किया है, पहले की अपेक्षा यह पत्रिका अब ज्यादा व्यवस्थित और सौष्ठवयुक्त प्रतीत हो रही है।'

नव लोकार्पित अंग्रेजी पत्रिका 'युवा होरिजन' के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'अंग्रेजीभाषी लोगों के लिए यह पत्रिका उपयोगी बन सकेगी। अभातेयुप ने इसके माध्यम से एक अपेक्षापूर्ति का प्रयास किया है।'

कार्यक्रम के अंत में अभातेयुप के सहमंत्री तथा अधिवेशन के संयोजक श्री हनुमान लूंकड़ ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम से पूर्व युवकों की रैली गांव की विभिन्न गलियों से होती हुई वीतराग समवसरण में पहुंचकर संपन्न हुई। आज रात्रि में जसोलवासियों की ओर से जसोल की दीक्षार्थिनी बहनों का मंगलभावना समारोह समायोजित हुआ।

पुरस्कार-सम्मान समर्पण समारोह

आज मध्याह्न में परम पावन आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में अभातेयुप द्वारा पुरस्कार-सम्मान समर्पण समारोह समायोजित हुआ। कार्यक्रम में 'आचार्य महाप्रज्ञ प्रतिभा पुरस्कार' श्री पन्नालाल पुगलिया (जयपुर) तथा श्री इन्द्रचन्द दुधेड़िया (बेंगलुरु) को, 'आचार्य महाश्रमण युवा व्यक्तित्व पुरस्कार' डॉ. प्रकाश छाजेड़ (बेंगलुरु), 'श्रेष्ठ कार्यकर्ता' सम्मान श्री प्रदीप बोथरा (रायसिंहनगर), श्री मुकेश कोठारी (अहमदाबाद), श्री निर्मल गोखरू (भीलवाड़ा) एवं श्री रमेश कोठारी (बेंगलुरु) को प्रदान किया गया। कार्यक्रम में 'श्रेष्ठ शाखा परिषद' तथा सेवा, संस्कार, संगठन के क्षेत्र में काम करने वाली विशिष्ट शाखा परिषदों को भी सम्मानित किया गया।

अभातेयुप के त्रिदिवसीय ४६वें वार्षिक अधिवेशन में ८६ युवक परिषदों के लगभग ६०० युवक संभागी बने। 'निर्झर' थीम पर आयोजित इस अधिवेशन के संभागियों को परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर से पावन पाथेय प्राप्त हुआ। पूज्यवर ने एक सत्र में युवकों की जिज्ञासाओं को भी समाहित किया। इसके

अतिरिक्त मुनि दिनेशकुमारजी, मुनि जिनेशकुमारजी एवं मुनि योगेशकुमारजी के निर्धारित विषयों पर वक्तव्य हुए। श्री संजीव छाजेड़ (अहमदाबाद), श्री बजरंग जैन (बेंगलुरु), श्री गौतम चोरड़िया (राजनांदगांव) ने युवकों को प्रशिक्षण दिया। एक सत्र में 'कैसे मनाएं स्वर्ण जयंती' तथा 'युवावाहिनी से अपेक्षा' विषय पर समूहचर्चा हुई। अधिवेशन के दौरान अभातेयुप के अध्यक्ष श्री संजय खटेड़ ने भावी परियोजनाओं की अवगति देते हुए उनमें सक्रियता से जुड़ने का आह्वान किया। महामंत्री श्री प्रफुल्ल बेताला ने प्रगति विवरण प्रस्तुत किया। उपाध्यक्ष श्री अविनाश नाहर ने नशामुक्ति और किशोरमंडल, उपाध्यक्ष श्री बी. सी. भलावत ने नेत्र जांच, सहमंत्री श्री हनुमान लूंकड़ ने जैन संस्कार, सहमंत्री श्री अमित नाहटा ने शाखा मूल्यांकन तथा प्रकाशन, कोषाध्यक्ष श्री कैलाश बोराणा ने आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर्स और भवन निर्माण तथा संगठन मंत्री श्री राजेश सुराणा ने सेवा, संगठन व मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव पर अपनी प्रस्तुति दी।

अधिवेशन के प्रायोजक थे श्री सुभाषचन्द विमलकुमार रूणवाल (जयसिंहपुर), श्री विमलकुमार संदीपकुमार नाहटा (सरदारशहर-गुवाहाटी), श्री गौतमचन्द, बाबूलाल, गणपतलाल, अशोककुमार, हनुमानचन्द (जसोल-सिंधनूर) तथा श्री संपतराज, रमेश, महेन्द्र चोपड़ा (जसोल-बेल्लारी)

जागरूक रहें जागरण के प्रति

४ नवम्बर। प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अभातेयुप के वार्षिक अधिवेशन में युवाओं को संबोधित करते हुए कहा--'युवावस्था कुछ कर गुजरने की अवस्था है। आध्यात्मिक दृष्टि से यह अवस्था कार्यकारी है। इस समय वह किसी भी कार्य को संपादित कर सकता है। युवाओं में साधर्मिक वात्सल्य का गुण विकसित हो। यह धर्म का भूषण है। साधना के क्षेत्र में इस गुण से एक-दूसरे को दृढ़ आधार मिल सकता है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने 'मूल्य जागरण का' विषय पर अपना उद्‌बोधन प्रदान करते हुए कहा--'अमुनि सदा सोए रहते हैं, जबकि मुनि सदा जागते रहते हैं। सोना और जागना हमारे जीवन की अनिवार्य प्रवृत्तियां हैं। द्रव्यनिद्रा व भावनिद्रा के रूप में दो प्रकार की नींद होती है। द्रव्यनिद्रा में लीन मुनि और ज्ञानी जागृत होते हैं और अज्ञानी बाहर से जागृत होते हुए भी भावनिद्रा की अपेक्षा सुषुप्त भी रह सकता है। चेतना में मूर्च्छा व मोह का प्रभाव भावनिद्रा है। इस भावनिद्रा से मुक्त होने के अर्थ में भी जागरण शब्द प्रयुक्त होता है। द्रव्य जागरण में अच्छे-बुरे दोनों काम किए जा सकते हैं। जागता हुआ व्यक्ति अगर गलत काम करता है तो उसका वह जागरण अभिशाप रूप बन जाता है। यदि अच्छे कार्य करता है तो वह जागरण वरदानस्वरूप बन जाता है। प्रवचन-श्रवण का लाभ भी जागरण की स्थिति में संभव हो सकता है। जागरण के लिए गुरु अंगुलि-निर्देश करते हैं। गुरु इसीलिए महान उपकारी होते हैं कि वे लोगों को जगाते हैं।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'मूर्च्छा की तन्द्रा को तोड़ना व मोह के जाल को भेदना आत्मजागरण है। इस जागरण का सर्वाधिक मूल्य है। सब समान रूप से जागृत नहीं हो सकते। कोई शुक्ला एकम तो कोई पूर्णिमा के चांद की भांति जागरूक रहते हैं। जीवन व्यवहार में विवेक जागे। विवेकी व अविवेकी दोनों काम करते हैं, पर उनके कार्य करने के तौर-तरीकों में अन्तर होता है। हम जागरण के प्रति जागरूक रहें और हमारी विवेक चेतना प्रशस्त रहे।'

तेजपुर से समागत संघ की ओर से सभाध्यक्ष श्री उगमचन्द बैद ने अपने विचार रखे। सिंधनूर (कर्नाटक) से पारमार्थिक शिक्षण संस्था में प्रविष्ट होने के लिए समुत्सुक सुश्री दर्शिका नाहर ने अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। कार्यक्रम के पश्चात अभातेयुप के बारहव्रत अभियान के संयोजक श्री

प्रदीप बोथरा ने देश के तीन सौ चौहत्तर क्षेत्रों से ६२५१ बारहव्रतधारी श्रावक-श्राविकाओं की संकलित सूची आचार्यवर को भेंट की। इस कार्य में श्री सतीश पुगलिया का भी सहयोग रहा। इसके साथ रायसिंहनगर में साध्वी कमलरेखाजी की प्रेरणा से भरे गए १२३१ नशामुक्ति के फार्म भी भेंट किए गए। साध्वी मानकुमारीजी की प्रेरणा से उकलानामंडी में भरे गए बारहव्रतधारकों के इक्यावन संकल्प पत्र सभाध्यक्ष श्री सुरेश जैन ने पूज्यचरणों में उपहृत किए।

मध्याह्न में दीक्षार्थी भाई-बहनों की भव्य शोभायात्रा तेरापंथ भवन से प्रारंभ होकर जसोल नगर के विभिन्न मार्गों से होती हुई पुनः तेरापंथ भवन के वीतराग समवसरण में पहुंची। शोभायात्रा भव्य और आकर्षक थीं। इसमें बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया। रात्रि में पारमार्थिक शिक्षण संस्था के तत्त्वावधान में दीक्षार्थियों का मंगलभावना समारोह का आयोजन हुआ, जिसमें दीक्षार्थी भाई-बहनों, उनके परिजनों व कार्यकर्ताओं ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। कार्यक्रम में उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

भव्य जैन दीक्षा समारोह

५ नवम्बर। कार्तिक कृष्णा षष्ठी। प्रातः नौ बजे वीतराग समवसरण में पूज्यवर के महामंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ। चातुर्मास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री गौतम सालेचा ने स्वागत भाषण किया। दीक्षार्थी मुमुक्षु भाइयों का परिचय मुमुक्षु ख्वाहिश ने, मुमुक्षु बहनों का परिचय मुमुक्षु रेखा व मुमुक्षु ललिता ने तथा श्रेणी आरोहण कर रही समणियों का परिचय समणी कंचनप्रज्ञाजी व समणी विकासप्रज्ञाजी ने दिया। समणी दीक्षा स्वीकार कर रही मुमुक्षु शीतल तथा दीक्षार्थी धीरज ने अपने भावपूर्ण विचार प्रस्तुत किए। साध्वी दीक्षा के लिए तत्पर समणियों ने सामूहिक रूप से गीत का संगान किया। आज्ञापत्र का वाचन पारमार्थिक शिक्षण संस्था के कोषाध्यक्ष श्री जसराज बुरड़ ने किया। सभी मुमुक्षुओं के आज्ञापत्र उनके माता-पिता व निकटतम अभिभावकों की ओर से पूज्यवर के करकमलों में समर्पित किए गए। श्री बाबूलाल बोकड़िया ने सपत्नीक आजीवन शीलव्रत स्वीकार किया। श्री राजेन्द्र बैद (छापर-बीदासर), सुश्री दर्शिका नाहर (सिंधनूर-कर्नाटक) व सुश्री ममता छाजेड़ (ग्वालियर) ने मंगलपाठ श्रवण कर पारमार्थिक शिक्षण संस्था में प्रवेश लिया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में संयम का विकास होना चाहिए। त्याग की चेतना के जागरण से भौतिकता का आकर्षण न्यून होता चला जाता है। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी व परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी स्वल्पायु में ही दीक्षित हो गए थे। सबके लिए साधु बनना कठिन है, पर त्याग की चेतना सबमें जागे।'

आचार्यप्रवर ने दस बजे दीक्षार्थियों के परिजनों की मौखिक आज्ञा लेकर दीक्षा की प्रक्रिया प्रारंभ की। लगभग १०.०५ बजे आचार्यप्रवर ने आर्षवाणी का उच्चारण करते हुए श्रेणी आरोहण कर रही छह समणियों, पांच मुमुक्षु भाइयों एवं छह मुमुक्षु बहनों को मुनि दीक्षा प्रदान की। चार मुमुक्षु बहनों को आचार्यवर ने समणी दीक्षा प्रदान की। १०.२० बजे केशलोच की प्रक्रिया प्रारंभ हुई। पूज्य आचार्यप्रवर ने सद्यः दीक्षित पांच मुनियों का तथा साध्वीप्रमुखाजी ने बारह साध्वियों का केश लोच किया। पूज्यवर ने आर्ष आशीर्वाद के साथ नवदीक्षित मुनियों तथा साध्वीप्रमुखाजी ने नवदीक्षित साध्वियों को अहिंसा के प्रतीक रजोहरण प्रदान किए। समणी नियोजिका ऋजुप्रज्ञाजी ने चारों समणियों को प्रमार्जिनी दी। सभी नवदीक्षित साधु-साध्वियों एवं समणियों का आचार्यवर ने नामकरण संस्कार किया। नवदीक्षित साधु-साध्वियों एवं समणियों के नाम इस प्रकार हैं--

१. मुमुक्षु धीरज जैन (तोषाम)	मुनि धवलकुमार
२. मुमुक्षु पुनीत गणधर चोपड़ा (बालोतरा)	मुनि पुनीतकुमार

३. मुमुक्षु प्रतीक टोडरवाल (भीलवाड़ा)	मुनि प्रतीककुमार
४. मुमुक्ष रौनक संकलेचा (पचपदरा)	मुनि रम्यकुमार
५. मुमुक्षु धीरज खांटेड़ (पचपदरा)	मुनि ध्रुवकुमार
६. समणी प्रसन्नप्रज्ञा (कालू)	साध्वी प्रसन्नयशा
७. समणी ज्ञानप्रज्ञा (बायतू)	साध्वी ज्ञानयशा
८. समणी अचलप्रज्ञा (समदड़ी)	साध्वी उन्नतयशा
९. समणी लावण्यप्रज्ञा (जसोल)	साध्वी लब्धियशा
१०. समणी आरोग्यप्रज्ञा (पचपदरा)	साध्वी आरोग्ययशा
११. समणी समताप्रज्ञा (जसोल)	साध्वी संबुद्धयशा
१२. मुमुक्षु कविता बोकड़िया (जसोल)	साध्वी कर्तव्ययशा
१३. मुमुक्षु खुशबू सालेचा (जसोल)	साध्वी ख्यातयशा
१४. मुमुक्षु भावना भंसाली (जसोल)	साध्वी भव्ययशा
१५. मुमुक्षु पूजा तातेड़ (जसोल)	साध्वी पावनयशा
१६. मुमुक्षु मोक्षा भंसाली (जसोल)	साध्वी मैत्रीयशा
१७. मुमुक्षु ज्योति संकलेचा (पचपदरा)	साध्वी जगतयशा
१८. मुमुक्षु मर्यादा भंसाली (जसोल)	समणी मनीषाप्रज्ञा
१९. मुमुक्षु प्रेक्षा बागरेचा (आसोतरा)	समणी प्रशस्तप्रज्ञा
२०. मुमुक्षु भावना वडेरा (जसोल)	समणी भास्करप्रज्ञा
२१. मुमुक्षु शीतल बोहरा (चेन्नई)	समणी सुविधिप्रज्ञा

दीक्षान्त संभाषण के अन्तर्गत परमपूज्य आचार्यप्रवर ने सभी नवदीक्षितों को प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा--'अब तुम साधु-साध्वी व समणी बन गए हो। तुम्हारी हर क्रिया अब संयमपूर्वक हो। साधु-साध्वियां खाने-पीने, चलने, बोलने आदि की क्रिया यत्नापूर्वक करें। सभी गुरु की आज्ञा व अनुशासन में चलें। साधु हमारे निकट रह जाते हैं। साध्वियां हमारे अनुशासन में साध्वीप्रमुखाजी की देखरेख में अपना विकास करें। समणियां हमारी आज्ञा में समणी नियोजिका ऋजुप्रज्ञा की देखरेख में अपना विकास करें। सभी यह सोचें कि हमारा सम्यक्त्व परिपुष्ट बने। गृहस्थों को भी धर्म करने का अधिकार है। उनके जीवन में भी अणुव्रत और बारहव्रत रूप धर्म की साधना चले।'

आज दीक्षित साधु-साध्वियों और समणियों के संसारपक्षीय परिजनों/न्यातीलों को साधुवाद देते हुए आचार्यप्रवर ने कहा--'आप लोगों ने अपने-अपने पुत्र-पुत्रियों को धर्मसंघ को समर्पित किया। आपने बड़ा दान देकर श्लाघनीय कार्य किया है।'

पूज्य आचार्यप्रवर ने अनुग्रहवृष्टि करते हुए मुमुक्षु ममता (टापरा) को समण प्रतिक्रमण सीखने का आदेश प्रदान किया। मुमुक्षु ममता तथा मुमुक्षु प्रीति (टापरा) की १५ फरवरी २०१३ को टापरा में समणी दीक्षा दिए जाने की घोषणा की। इसी तरह असाढ़ा में २०, २६, २७ जनवरी २०१३ को वर्धमान महोत्सव मनाने की घोषणा की। कार्यक्रम का संचालन मुनि हिमांशुकुमारजी ने किया। लगभग दो घंटे तक चला दीक्षा समारोह शान्त वातावरण में परिसंपन्न हुआ। इन दीक्षाओं के साथ जसोल में अब संत ५७, साध्वियां १०२ हो गई हैं। धर्मसंघ में आज के दिन संतों की संख्या १५८ और साध्वियों की संख्या ५२४ हो गई है। प्राप्त आंकड़ों के अनुसार आज के कार्यक्रम में जनता की उपस्थिति बारह हजार आंकी गई।

बाहर निकलें काम-भोग के दलदल से

६ नवम्बर। प्रातःकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'संसार के भौतिक सुखों में सामान्य आदमी रचा-पचा रहता है। ऐसे व्यक्ति ऐन्द्रिय सुखों में इतने निमग्न हो जाते हैं कि उससे बाहर निकल पाना उनके लिए उसी तरह मुश्किल हो जाता है, जैसे कीचड़ में फंसे हाथी का निकलना कठिन होता है। काम-भोग में रत रहने वाले व्यक्ति के भीतर भी ऐसी चेतना जाग सकती है कि वे वैराग्य से भावित होकर अपने परिवार और पत्नी को छोड़ साधु बन जाएं।

संसार से विरक्त होने की चेतना का जागरण बिना क्षयोपशम व सौभाग्य के संभव नहीं है। गृहस्थावस्था में रहते हुए भी साधना का अभ्यास किया जा सकता है। धर्मगुरु उसके साधना-पथ को आलोकित करते हैं और उसे दलदल से बाहर निकालने का प्रयत्न करते हैं।'

जैन विश्वभारती मान्य विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा विभाग के निदेशक श्री आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने विश्वविद्यालय की शैक्षणिक प्रवृत्तियों की अवगति दी। श्री घेवरचन्द मेहता ने भी इस सन्दर्भ में अपने विचार रखे।

दम्पति शिविर का आयोजन

२२ अक्टूबर को परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि एवं आचार्यश्री महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति व जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, जसोल के तत्त्वावधान में दम्पति शिविर का आयोजन हुआ। इस शिविर में लगभग तीन सौ दम्पति सहभागी बने। संभागियों को परमपूज्यप्रवर से पावन पाथेय संप्राप्त हुआ। मंत्री मुनिश्री, आगम मनीषी मुनि महेन्द्रकुमारजी एवं मुनि जिनेशकुमारजी के प्रेरक वक्तव्य हुए। श्री पद्मजा शर्मा, श्री बजरंग जैन, श्री ओमप्रकाश बागरेचा ने शिविर संभागियों के कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त किए। श्री खूबचन्द भंसाली ने आभार व्यक्त किया।

अभ्यर्थना समण संस्कृति के उद्गाता की

१४ अक्टूबर को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मुम्बई द्वारा महातपस्वी शान्तिदूत आचार्यश्री महाश्रमण को **'श्रमण संस्कृति उद्गाता'** विरुद समर्पित किया गया। दिगम्बर आम्नाय की विशिष्ट संस्था द्वारा किसी श्वेताम्बर आचार्य को इस प्रकार का विरुद समर्पित करना ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और धर्मसंघ के लिए गौरव का विषय है। विज्ञप्ति अंक २६ के माध्यम से जब यह संवाद देश भर में प्रसारित हुआ तो बहिर्विहारी साधु-साध्वियों सहित विभिन्न क्षेत्रों में प्रवासित श्रावक-श्राविकाओं ने आह्लाद की अनुभूति की। पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में प्रेषित दो अभ्यर्थना पत्र यहां प्रस्तुत हैं--

श्रमण संस्कृति के उद्गाता महातपस्वी शान्तिदूत परमपूज्य आचार्यवर के श्रीचरणों में सादर निवेदन

गुरुदेव! आपके नेतृत्व में जिनशासन की चतुर्मुखी प्रगति हो रही है। भारतवर्षीय दिगम्बर जैनतीर्थ कमेटी द्वारा आपके पादपद्मों में जो दिव्यावदान आलेख समर्पित किया गया, उसे पढ़कर मन हर्ष से बांसों उछलने लगा। एक श्वेताम्बर आचार्य का दिगम्बर समाज के द्वारा श्रद्धाप्रणत मुक्त भावों से अभिनंदन करना इतिहास की दुर्लभ घटना है। तेरापंथ इतिहास का यह एक स्वर्णिम प्रसंग बन गया है।

परम पूज्यवर!

आपके स्वल्पकालीन आचार्यकाल में अनेक नए कीर्तिमान बने हैं। इस भौतिकवादी युग में ५ नवम्बर को २१ दीक्षाओं का होना आपकी प्रबल पुण्यवत्ता का प्रमाण है।

विनयनत

उदयपुर, महाप्रज्ञ विहार — मुनि राकेशकुमार

३ नवम्बर २०१२

अर्हम्

''प्रज्ञा के महासुमेरु, नैतिक क्रान्ति के संवाहक, महानता के शिखरपुरुष, शान्तिदूत आचार्यप्रवर के श्रीचरणों में समर्पित हृदयोद्गार--

गुरुवर्य!

विज्ञप्ति अंक २६ हमें २ नवम्बर को मिला। आचार्यप्रवर के गुणानुवादस्वरूप **'दिव्यावदान'** आलेख पढ़कर मानस अत्यन्त हर्ष और आह्लाद से भर गया। आपश्री को तीर्थक्षेत्र कमेटी परिवार ने 'श्रमण संस्कृति उद्गाता' अलंकरण से विरुदाया। हम दूर स्थित आपकी वर्धापना में समवेत स्वर से **'ऊं अर्हम्'** हर्षध्वनि कर रही हैं। ये आपकी अनुत्तर संयम साधना, अतिशायी आभा, महनीय मानव सेवा, उदात्त सोच, विश्व विकास की कमनीय कामना का ही कमाल है। आज पूरा विश्व विश्वविभूति को ऊंची नजरों से निहार रहा है।

प्रभो!

इस आलेख को पढ़कर हमारा सीना गौरव से फूल गया। कितना हर्ष हुआ, उसे शब्दों से नहीं बांधा जा सकता। सचमुच में ही यह तेरापंथ धर्मसंघ के लिए बहुत ही गौरव की बात है। हम धन्य हैं, कृतपुण्य हैं आप जैसे महान प्रतापी अनुशास्ता को पाकर।

गुरुदेव!

आपकी जय हो, विजय हो। आप चिरायु हों। युगों-युगों तक विश्व का पथदर्शन करते रहो, इसी शुभाशंसा के साथ

साध्वी मान

दीक्षा आदेश

७ नवम्बर। परम पावन आचार्यप्रवर ने मुमुक्षु मैत्री (असाढ़ा) को साध्वी प्रतिक्रमण का आदेश प्रदान करते हुए असाढ़ा में २३ जनवरी २०१३ को समायोज्य दीक्षा समारोह में साध्वी दीक्षा प्रदान करने की घोषणा की है।

स्मृति-संबल

- देशनोक निवासी श्रीमती मदनदेवी बोथरा का १०४ वर्ष की सुदीर्घ अवस्था में देहावसान हो गया। वे लंबे समय से सावन, भादवा में एकान्तर तप करती थीं। सचित्त जल, जमीकन्द, सात लिलोती से अधिक खाने का त्याग था। प्रतिदिन सात व उससे अधिक सामायिक किया करती थीं। वह सदैव प्रहरपर्यंत त्याग रखती थीं। वे निर्मोही मनोवृत्ति की श्राविका थीं।
- समदड़ी निवासी श्री छगनराज जीरावला का देहावसान हो गया। वे साध्वी सम्पतयशाजी के संसारपक्षीय पिता थे। श्री जीरावला श्रद्धाशील श्रावक थे।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
Date of Publication : 10-11-2012 L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

- श्रीडूंगरगढ़ निवासी श्रीमती फूसीदेवी पारख (धर्मपत्नी-स्व.श्री आसकरणजी पारख) का देहान्त हो गया। उनके वर्षों से जमीकन्द का त्याग था। प्रतिदिन सामायिक की साधना चलती थी और प्रतिवर्ष एक माह गुरु उपासना करती थीं। पूरा परिवार श्रद्धालु और संस्कारी है।
- आसीन्द निवासी श्रीमती मीठूदेवी रांका का देहावसान हो गया। पिछले इक्कीस वर्षों से पांचों तिथि को सचित्त खाने, पचास वर्षों से रात्रि भोजन व चालीस वर्षों से सचित्त जल पीने का त्याग था। वे लंबे समय तक साधु-साध्वियों की मार्गवर्ती सेवा करती रहीं। प्रतिदिन पांच सामायिक का उनके नियम था। पूरे परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।
- पचपदरा निवासी श्री चंपालाल कोठारी का निधन हो गया। साध्वी पानकुमारीजी श्री कोठारी की संसारपक्षीया भुआजी थीं। चंपालालजी श्रद्धालु और समर्पित श्रावक थे।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

३१००/- स्व. श्रीमेती संतोषकंवर भंडारी (धर्मपत्नी-श्री घेवरचन्दजी भंडारी, छोटीखाटू-चेन्नई) के संथारापूर्वक समाधिमरण के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र हंसराजचन्द, सुपौत्र संदीपचन्द, अमिताभचन्द एवं प्रपौत्र वरुण, दर्शन भंडारी द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री माणकचन्दजी देवड़ा (बगड़ीनगर-बेंगलुरु) की ७वीं पुण्यतिथि पर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मैनाबाई, सुपुत्र एवं पुत्रवधू पदमकुमार-निर्मला, सुपौत्र दीपककुमार एवं सुपौत्री डाली द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. भंवरलालजी हस्तीमलजी बैदमूथा, धुलिया-खानदेश (महाराष्ट्र) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुलोचनाबाई, सुपुत्र वर्धमान, जितेन्द्र, पुत्रवधू संगीता, सीमा, प्रपौत्र तुषार, प्रपौत्री प्रेक्षा बैदमूथा द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व. पुसालालजी आंचलिया (पादूकलां) की प्रथम पुण्यतिथि (१ नवम्बर) पर उनके सुपुत्र संपतराज, ताराचन्द, ज्ञानचन्द आंचलिया, दिल्ली-सिरकाली-चेन्नई द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री पूसराजजी एवं स्व. श्रीमती इन्द्राईदेवी फूलफगर (लाडनूं-ग्वालपाड़ा) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र व पूत्रवधू कन्हैयालाल-विमलादेवी, सुपौत्र व पौत्रवधू विक्रम-अमिता, प्रपौत्र सुजल, प्रपौत्री आकांक्षा द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्री स्वरूपचन्दजी छाजेड़ (कुरहापानका-भुसावल) के ७५वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कमलादेवी, सुपुत्र व पुत्रवधू प्रवीण-मंजु, प्रमोद-सुनीता, सुपौत्र प्रीतेश, लोकेश, सुपौत्री समीक्षा, पलक छाजेड़ द्वारा प्रदत्त।

- विज्ञप्ति के जिन वार्षिक सदस्यों का शुल्क समाप्त हो चुका है, वे अपनी सदस्यता का नवीनीकरण शीघ्र करवा लें। वार्षिक शुल्क २५०/- अथवा पन्द्रह वर्ष का शुल्क २१००/- हमारे दिल्ली कार्यालय अथवा शिविर कार्यालय में जमा कराएं। शुल्क पंजाब नेशनल बैंक की शाखा में आदर्श साहित्य संघ के एकाउंट नं. ०१३३०००१००३६८३५६ में भी जमा करा सकते हैं।

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता–

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति, पो. जसोल-३४४०२४ जि. बाड़मेर (राजस्थान) फोन : ६६८००५५३८१, ६३५२४०४६४१

दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**